हिन्दी विभाग

स्नातक द्वितीय (II)

पत्र संख्या :- 03

नई कविता की विशेषता पर प्रकाश डाले ?

सन् 1950 ई० के बाद नई कविता का नया रूप शुरू हुआ । प्रयोगवादी कविता ही विकसित होकर नई कविता कहलायी । यह कविता किसी भी प्रकार के 'वाद' के बंधन में न बँधकर 'वाद' मुक्त होकर रची गयी । नई कविता की विषय वस्तु मात्र चमत्कार न होकर के भोगा हुआ यथार्थ जीवन है। नई कविता परिस्थितियों की उपज है।

नई कविता स्वतंत्रता के बाद लिखी गई वह कविता है जिसमें नवीन भाव बोध, नये मूल्य तथा नया शिल्प विधान है। नई कविता में मानव का वह रूप जो दार्शनिक है, वादों से परे है, जो क्षोत में प्रगट होता है, जो प्रत्येक स्थिति में जीता है, प्रतिष्ठित हुआ है।

* नई कविता की प्रमुख विशेषता इस प्रकार है:-

1.) लघु मानववाद की प्रतिष्ठा :- मानव जीवन को महत्वपूर्ण मानकर उसे अर्थपूर्ण दृष्टि प्रदान की गई है।

2.) प्रयोगों में नवीनता :- नए-नए भावों को नए-नए शिल्प विधानों में प्रस्तुत किया गया है।

3.) क्षणवाद को महत्व :- जीवन के प्रत्येक क्षण को महत्वपूर्ण मानकर जीवन की छोटी-छोटी अनुभूति को कविता में स्थान प्रदान किया गया है।

4.) अनुभूतियों का वास्तविक चित्रण :- मानव व समाज दोनों की अनुभूतियों का सत्यार्थ के साथ चित्रण किया गया है।

5.) कुंठा, संत्रास, मृत्युबोध :- मानव मन में व्याप्त कुंठाओं का, जीवन के संत्रास एवं मृत्युबोध का मनोवैज्ञानिक ढंग से चित्रण इस काल की कविताओं की पहचान है।

6.) बिम्ब :- प्रयोगवादी कवियों ने नूतन बिम्बों की खोज की है।

7.) व्यंग्य प्रधान रचनाएँ :- इस काल में मानव जीवन की विसंगतियों, कुरूपताओं एवं अनैतिकतावादी मान्यताओं पर व्यंग्य रचनाएँ लिखी गई है।

नई कविता की अन्य विशेषताएँ :—

1.) अति यथार्थता

2.) पलायन की प्रवृति

3.) वैयक्तिकता

4.) निराशावाद

5.) बौद्धिकता

आलोचकों का एक वर्ग यह भी मानता है कि प्रयोगवाद का विकास ही कालान्तर में नई कविता के रूप में हुआ।

प्रस्तुतकर्त्ता
बेनाम कुमार (अतिथि शिक्षक)
हिन्दी विभाग
राज नारायण महाविद्यालय हाजीपुर
मो० नं० - 829227104।

दिनांक
14/12/2020